असमीया विवाह गीतों में राम का प्रसंग

करबी भूयाँ

वाल्मीकि कृत 'रामायण' एक महाकाव्य है। भारतीय संस्कृति में इसे घरेलू जीवन का आधार माना जाता है। विश्व की किसी भी संस्कृति में 'रामायण' जैसा महाकाव्य नहीं है। यह एक राष्ट्र की अस्मिता का परिचायक है। 'रामायण' भारतीय समाज के साथ इस प्रकार जुड़ा हुआ है कि देश की प्रायः सभी भाषाओं में रामकथा को लेकर ग्रंथ की रचना हुई है। प्रायः प्रत्येक भारतीय रामकथा जानते हैं, यह अपने प्रदेश की ही कथा लगती है। 'रामकथा' में दिये गये शाश्वत जीवन मूल्यों के कारण पूरे भारतवर्ष में यह सुप्रचलित है। 'रामकथा' घर-परिवार और समाज के समक्ष प्रेम से भरे त्याग का आदर्श रूप है। सदाचारमय जीवन-यापन की शिक्षा भी रामकथा से मिलती है। भारत भूमि के प्रत्येक चप्पे पर रामकथा की छाप है। कितने ही पर्वत, झरने और कुण्डों के नाम रामायण के पात्रों से संबंधित हैं। देश के कई स्थलों पर वाल्मीकि के आश्रम हैं। एक प्रकार से हम कह सकते हैं कि राम का उदात्त चरित्र ही भारतीयता है।

भारतीय संस्कृति का एक अन्यतम किस्सा है, लोक साहित्य। सामान्य जन से जुड़ा हुआ जो साहित्य है, उसे ही लोक साहित्य कहा जाता है। यह समाज का दर्पण-स्वरूप है। लोग अपनी सामान्य भाषा में ही अपने मन के भावों को लोक साहित्य के माध्यम से प्रकट करते हैं। लोक साहित्य शास्त्रीय साहित्य की जननी होती है।

पूर्वोत्तर भारत के आठों राज्यों में सैंकड़ों जनजातियाँ रहती हैं। सबकी भाषा संस्कृति अलग-अलग है। इसी के चलते लोक साहित्य में भावों की अभिव्यक्ति में भी अंतर पाया जाता है। पूर्वोत्तर भारत लोक साहित्य से समृद्ध है। असम पूर्वोत्तर भारत का अंग है। असम प्रदेश की भाषा असमीया है और यहाँ की अनेक जाति जनगोष्ठियां से मिलकर बृहत् असमीया समाज का निर्माण हुआ है।

असमीया लोक साहित्य के अंतर्गत कहानी, लोकगीत, दृष्टांत, मुहावरा, लोकोक्ति, मन्त्र आदि आते हैं। असमीया समाज व्यवस्था में विभिन्न उत्सव, अवसर, सामाजिक अनुष्ठानों में लोकगीत गाए जाते हैं। असमीया भाषा में प्रचलित लोकगीतों में प्रमुख हैं- श्रम गीत, बिहु गीत, निचुकोनी गीत (लोरी), देवियों के गीत, बारह महीनों के गीत, ओजा पालि गीत आदि।

असमीया लोक गीतों के अधिकांश गीतों में नारी मन की भाव और अनुभूति का विशेष रूप से प्रतिफलन परिलक्षित होता है। विवाह या शादी प्रत्येक समाज और संस्कृति का एक अनिवार्य अनुष्ठान है। असमीया समाज में प्रचलित विवाह प्रथा में नारी की भूमिका सर्वोपरि है। विवाह में असमीया औरतें (आयती) विवाह गीत के माध्यम से अपनी अपूर्व कवित्व प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं। विवाह गीत के माध्यम से एक अनपढ़ औरत भी अपने जीवन के अभिज्ञता से समाज जीवन और सांसारिक जीवन के विविध

दायित्वों को भी प्रकाशित करते हैं। शब्द प्रयोग एवं उपमा आदि अलंकार के प्रयोग, भाषा की सरलता, चित्रधर्मिता, गीतिधर्मिता आदि विवाह गीत की मूल विशेषता है। इसके साथ ही असमीया समाज में प्रचलित रीति नीति, आचार व्यवहार और प्रकृति वर्णन भी प्रतिफलित हो उठते हैं। असमीया तथा भारतीय परंपरा विवाह गीतों की अन्यतम विशिष्टता है।

लोक जीवन में विवाह के समय प्रत्येक वर राम और प्रत्येक दुल्हन सीता हो जाती है। असमीया विवाह गीत में 'रामायण' के उपादान विशेष रूप से प्रतिफलित होते हैं। महाकाव्य के प्रधान चरित्र एवं नायक नायिका राम और सीता को विवाह गीत में स्थान दिया जाता है। राम और सीता के आदर्श मिलन की कथा को स्मरण करके वर-वधू को भविष्य के लिए आशीर्वाद दिया जाता है। विवाह गीत में औरतें (आयती) बार बार 'राम राम' अथवा 'ऐ राम' शब्द का प्रयोग करते हैं। जैसे:

"राम राम पाणत पत्र लेखि
राम राम दिलेहि आइदेउ
राम राम पाणत पत्र लेखि दिले।।
राम राम सेई पत्रखन
राम राम पाई रामचंद्रई
राम राम अलंकार पठियाई दिले।।

(यहाँ सीता के द्वारा राम को पत्र भेजने की और पत्र पढ़कर राम द्वारा सीता के लिए अलंकार भेजने के प्रसंग का उल्लेख है।)

विवाह कार्यों के विभिन्न समय में अर्थात वर-कन्या को नहाने के समय, सजाने के समय, दुल्हा-दुल्हन को नहाने के लिए पानी लाते समय, दुल्हा का स्वागत करते समय, अग्नि को साक्षी मानकर फेरे लेते समय विवाह गीत गाए जाते हैं और प्रत्येक प्रसंग में राम सीता का उल्लेख मिलता है। दुल्हा को स्नान कराते समय इस प्रकार गाते हैं-

"उलाई आहा रामचंद्र
ऐ हे दुवारदलि बाजे
घरते नोवाब माजे
ऐ हे नकरिबा लाजे"

(अर्थात यहाँ दुल्हा को सम्बोधित आयती कहती हैं कि हे रामचंद्र हम तुम्हें नहवाने आये हैं, तुम लज्जा मत करो और दहलीज पार करके बाहर आ जाओ।)

जब दुल्हा के घर से दुल्हन के लिए कपड़ा- आभूषण आता है, तब कन्या को लक्षित करके यह गीत गाया जाता है-

"रामरे घररे अये अलंकार

आनिछु सराइ भराई
भितरते बहि कि करा जानकी
लोवाहि माथा दुवाई।।

(अर्थात जानकी, तुम्हारे लिए राम के घर से आभूषण लेकर आए हैं। तुम घर के अन्दर बैठकर क्या कर रही हो? बाहर आकर तुम इसे स्वीकार कर लो।)

कन्या को जब वर के घर से देने वाले आभूषण पहनाते हैं, तब आयती इस प्रकार गाती हैं-

"मारार अलंकार थोवाहे जानकी
पितारार अलंकार थोवा हे
रामे दि पठाइसे विचित्र अलंकार
हाते जोरे करि लोवा हे।।"

(इसका अर्थ इस प्रकार है- जानकी तुम माता पिता द्वारा दिये गये अलंकार खोल दो, रामचंद्र ने तुम्हारे लिए विचित्र अलंकार भेजे हैं, तुम हाथ जोड़कर इसे स्वीकार करो।)

असमीया विवाह गीतों में राम-सीता के साथ -साथ अयोध्या, मिथिला आदि नाम भी संयोजित किया जाता है। राम- सीता को आदर्श दम्पति के रूप में वर-वधू के साथ तुलना करते हुए गाते हैं-

"सीताक लै रामचंद्र अयोध्यालै जाय
नगरर प्रजासबे बेरि बेरि छाय
धनु भांगि रामचन्द्रई सीताक लैया जाय
परशुरामे युद्ध करे बाटत लगे पाय।।"

(यहाँ श्री रामचंद्र द्वारा हरधनु तोड़कर सीता को जीतकर अयोध्या ले जाने का प्रसंग है।)

जब दुल्हा दुल्हन अग्नि को साक्षी मानकर फेरे लेने बैठते हैं, तब विवाह गीत इस प्रकार गाए जाते हैं-

"उठोते बहोते हुमते घूरोते
रामचन्द्रर लागिछे दुख,
सकलो दुखके गुछे रामचन्द्रर
देखिले जानकीर मुख।।

(अर्थात उठते-बैठते और फेरे लेते समय राम को बहुत दु:ख अनुभव हो रहा है, लेकिन जानकी का मुख देखकर उनके सारे दु:ख दूर हो जाते हैं।)

असमीया विवाह प्रथा में वर का स्वागत करना, पानी लाना (पानी तोला), कन्या को वर के हाथों अर्पण करना, अंगूठी खोजना, पाशा खेलना आदि अनेक रीति रिवाज प्रचलित हैं। विवाह के एक दिन बाद (बाहि बिया) जब वर-वधू खेल-खेलने बैठते हैं, तब इस प्रकार गाते हैं-

"पातिले पाशार खेला रामे सीताई बहि,
सीता रामे पाशा खेले साक्षी आछे सखी।"

(अर्थात देखो राम और सीता पाशा खेल खेल रहे हैं और सभी समाज उनका साक्षी है।)

विवाह संगीत के माध्यम से नारी के मन, रूप-लावण्य और नारी जीवन के विविध चित्र प्रकाशित होते हैं। भविष्य में राम और सीता को आदर्श मानकर इन गीतों के माध्यम से जीवन आगे बढ़ाने के लिए वर-वधू को उपदेश दिया जाता है। जब भरे समाज में दुल्हा बार-बार दुल्हन की तरफ देखता है, तब औरतें दुल्हा को चिढ़ाने के लिए गाती हैं-

अलनि दलनि पका चपरानि
आमार हाते भरि भांगे,
तेउ नपतियाई आमार रामचंद्रई
तेउ बोले जानकीक लागे।

(इसमें आयती कहती हैं कि हम इतने सारे रमणी (नारी) राम को पाने के लिए तड़प रहे हैं, लेकिन फिर भी राम सिर्फ जानकी को ही पसंद करते हैं।)

इस प्रकार असमीया लोक संगीत के अन्यतम अंग विवाह गीत में रामायण के कथा एवं उपादानों को प्रमुख स्थान मिला है। विवाह गीतों में मूलतः रामायण के नायक-नायिका राम और सीता को स्मरण किया जाता है। राम भारतीय समाज के आदर्श पति हैं। विवाह एक पवित्र अनुष्ठान है। विवाह के माध्यम से एक पुरूष और एक नारी पूरे जीवन के लिए बंधे जाते हैं। इसलिए इस पवित्र क्षण में राम-सीता का स्मरण शुभ माना जाता है। विवाह गीतों में प्रायः राम-सीता का उल्लेख मिलता है। असमीया लोक-संस्कृति के तहत विवाह में रामायण के जो उपादान प्रतिफलित हुए हैं, वह सचमुच में लोक परंपरा का एक उत्कृष्ट निदर्शन है। इसके माध्यम से 'रामायण' महाकाव्य की विशेषता एवं प्रभाव का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

नेउग, महेश्वर. असमिया साहित्यर रूपरेखा, चन्द्र प्रकाशन.
बरदलै, निर्मल प्रभा, असमर लोक संस्कृति: चन्दन दे प्रकाशन.
बिरिंचि, कुमार बरुवा. असमर लोक संस्कृति: चन्दन दे प्रकाशन.
शर्मा, सत्येंद्र नाथ. असमिया साहित्यर समीक्षात्मक इतिवृत्त: सौमार प्रकाशन.

*(**लेखकीय परिचय:** करबी भूयाँ लंका महाविद्यालय, असम के हिंदी विभाग में अतिथि प्राध्यापिका हैं।)*